

20 जून 2023 गोरखपुर।

श्री गोरक्षनाथ मंदिर गोरखपुर परिसर स्थित दिग्विजयनाथ स्मृति भवन में श्री गुरु गोरक्षनाथ योग संस्थान एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित साप्ताहिक योग शिविर के पांचवे दिन " योग की विविध धाराएं " विषय पर बतौर मुख्य वक्ता ऋषिकेश उत्तराखण्ड से पधारे श्री अरविन्द योगी ने कहा कि योग अनुभूति का विषय है। इसको केवल ग्रंथ पढ़ने से या सुनने से पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता। साधक निरन्तर अभ्यास व वैराग्य के द्वारा शरीर, इन्द्रिय और विषयों से विरत होकर आत्मस्थ होता हुआ स्वयं का परमात्मा से एकाकार कर लेता है। इस प्रकार से आत्मा का परमात्मा से मिलन ही योग है।

उन्होंने योग की विविध धाराओं का वर्णन करते हुए बताया की महर्षि पतञ्जलि द्वारा बताए गए अष्टांग योग एवं महायोगी गुरु गोरक्षनाथ द्वारा बताए गए हठयोग पर ही आधारित योग की सभी धाराएं अनेकों महापुरुषों के द्वारा बतायी गयी हैं। कर्मयोग, भक्तियोग , अथवा ज्ञानयोग सभी का लक्ष्य परमपद की प्राप्ति ही है।

उन्होंने कहा कि योग के तीन प्रकार के अधिकार होते हैं उत्तमाधिकार, मध्यमाधिकार और अधमाधिकार। इन अधिकारों से साधकों की योग में अधिकारिता योग शास्त्र में बतायी गयी है।

उन्होंने ध्यान और समाधि के अन्तर को स्पष्ट करते कहा कि ध्यान अष्टांग योग में वर्णित एक ऐसी अवस्था है जो योग की प्रक्रिया में चित्त को परमात्मा में स्थित होने को कहते हैं। इस अवस्था से योग की चरमावस्था को प्राप्त किया जाता है।

अध्यक्षता गोरक्षपीठ के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी , संचालन एवं आभार ज्ञापन शिविर प्रभारी योगी सोमनाथ जी महाराज ने किया।

कार्यक्रम में डॉ॰ जयंतनाथ, डॉ॰ प्रांगेश कुमार मिश्र आदि उपस्थित रहे ।